ISSN 097-6459

शोध-संप्रेषण

SHODH-SAMPRESHAN

International Peer Reviewed Refereed Research Journal

RRDC
Research & Research Development Centre
Research Journal
Conferences
Seminars
International Events

शोध एवं अनुसंधान के लिए समर्पित अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

International Research Journal for Research & Research Activities

IMPACT FACTOR GIF 2.1468

शोध-संप्रेषण

शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र
रायपुर, छत्तीसगढ़

त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल
International Peer Reviewed Refereed Journal

RRDC

शोध एवं अनुसंधान के लिए समर्पित अंतराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल
International Research Journal for Research & Research Adivities

ISSN 097- 6459

अंक : 24 वर्ष : 7 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2018

• समीक्षक एवं संपादक मंडल •

प्रमुख संरक्षक
डॉ. चित्तरंजन कर
पूर्व अध्यक्ष, साहित्य एवं भाषा
अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर

संपादक
डॉ. राजेश दुबे
प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय,
कोहका-नेवरा (तिल्दा)
रायपुर, (छत्तीसगढ़)

प्रधान संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कल्याण स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, भिलाईनगर
(छत्तीसगढ़)

संपादक : हिन्दी
डॉ. श्रीराम परिहार
खण्डवा

संपादक : शिक्षा संकाय
डॉ. तृषा शर्मा
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा)

संपादक : विश्व एवं अनुवाद साहित्य
डॉ. हेमराज सुंदर
महात्मा गांधी अध्ययन पीठ,
पोर्टलुईस, मॉरीशस

संपादक : अंग्रेजी
डॉ. प्रमोद शुक्ला
जगदलपुर (छत्तीसगढ़)

संपादक : कृषि
प्रो. मनहर आडिल
सेवानिवृत्त प्रोफेसर
इंदिरा गांधी कृषि
विश्वविद्यालय, रायपुर
(छत्तीसगढ़)

संपादक : समाजविज्ञान संकाय
डॉ. कृष्णवीर सिंह
प्राध्यापक
जयपुर, राजस्थान

संपादक : विज्ञान संकाय
डॉ. वी.के. गुप्ता
विभागाध्यक्ष (गणित)
शासकीय माधव विज्ञान
महाविद्यालय,
उज्जैन (म.प्र.)

संपादक : विधि
मुकेश कुमार मालवीय
सहायक प्राध्यापक
लॉ स्कूल, बनारस हिन्दू
विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. शिप्रा बेनर्जी
प्राध्यापक (गृहविज्ञान)
शास.दू.ब. महिला महाविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

सलाहकार मंडल

- डॉ. प्रमोद शर्मा (नागपुर)
- डॉ. मुन्ना पांडेय (गोरखपुर)
- डॉ. अरुण होता (कोलकाता)
- डॉ. सुशील कुमार शर्मा (आईजोल मिजोरम)
- डॉ. परविन्दर कौर (जम्मू)
- डॉ. आलोक शुक्ला (रायपुर)
- डॉ. रामनारायण पटेल (दिल्ली)
- डॉ. रवीन्द्र कात्यायन (मुंबई)

संपादकीय पता
वैभव प्रकाशन
सागर प्रिंटर्स के पास, अमीनपारा चौक,
पुरानी बस्ती, रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : 0771-4038958, मो. 094253- 58748

मूल्य : एक प्रति : 100 रु.
आजीवन : 5000 रु. पांच वर्ष-2000
सदस्यता शुल्क : 1000 रु. (एक वर्ष)
आलेख संपर्क : 094253-58748
e-mail : shodhsampreshan36@gmail.com

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaijor), Mahasamund (C.G

शोध-संप्रेषण

त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

अंक : 24 वर्ष : 7 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2018

अनुक्रमणिका

1.	A REVIEW ON NIDRANASHA AND ITS AYURVEDIC MANAGEMENT	Dr. Shradha Bhardwaj, Dr. Naresh Bhagat, Dr. L.C.Harjpal Dr. Rupendra Chandrakar	05
2	THEME OF SOCIAL INJUSTICE AND CASTE SYSTEM IN THE NOVELS 'UNTOUCHABLE' AND 'THE GOD SMALL THINGS'	Dr. Shuchita Srivastav	09
3	हिन्दी नवजागरण एवं डॉ. श्री रामविलास शर्मा	डॉ. प्रकाशचन्द्र सतपथी	12
4	मधुमेह रोगियों में पथ्य की भूमिका	डॉ. नरेश भगत, डॉ. श्रद्धा भारद्वाज डॉ. जी. आर. रात्रे, डॉ.रुपेन्द्र चन्द्राकर	14
5	योग का स्वरूप	डॉ. नीलम श्रीवास्तव	18
7	विश्व भाषा : जन भाषा कौशल	डॉ. रामनिवास साहू	21
8.	छत्तीसगढ़ के गोंड़ जनजातियों में स्त्रियों की स्थिति	डॉ. (श्रीमती) काजल मोइत्रा श्रीमती मंजूषा साहू	24
9.	"इदन्नमम" में प्रयुक्त आँचलिक षब्दों का अध्ययन	पूजा विश्वकर्मा	26
11.	प्रेमचंद के हिन्दी उपन्यास में स्त्री मुक्ति के विविधि आयाम	डॉ. रमणी चंद्राकर	29

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaitor), Mahasamund (C.G.)

ISSN 097- 6459

हिन्दी नवजागरण एवं श्री रामविलास शर्मा

डॉ. प्रकाशचन्द्र सतपथी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
रामचन्डी महाविद्यालय,
सरायपाली (छ.ग.)

1. नवजागरण के अग्रदूतः-

नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु जी ने अपने साहित्य के माध्यम से जनता की चेतना को उद्‌बुद्ध किया। उनके साहित्य ने जन जीवन में जो चेतना ला दी वह इस समय से पूर्व के सामूहिक प्रयत्नों से भी संभव न थी। डॉ. श्री रामविलास शर्मा जी ने अपने निबंध साहित्य के माध्यम से अपने युग की चेतना को प्रबुद्ध किया। वे सत्कवि, देश प्रेमी, राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्ण और सह्दय कोटि के समाज सुधारक भी थे।

''भारतेन्दु जी ने भक्ति भावना से पूर्ण रचनाएँ बहुत की, किन्तु उनका साध्य सदैव देश, जाति और भाषा की प्रगति रहा। उन्होंन युग की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का भली-भाँति अध्ययन करके अपनी अद्‌भुत प्रतिभा और दूरदर्शिता से भारत देश का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें उनका समाज और देश प्रेम वैयक्तिक कल्पना न रहकर राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बन गया है।''

> शर्मा जी की समीक्षा शैली की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें उदाहरण विद्यमान रहते है। इसमें आलोचना में बल आ जाता है। उन्होंने जब महापंडित राहुल जी की विचारधारा की आलोचना की थी तो साहित्य में जैसे एक भूचाल आ गया था, किन्तु उन्होंन प्रमाण देकर अपनी बात कही थी, इसलिए आने वाले तूफान से अप्रभावित रहे। स्वयं उनकी आलोचना जब अमृतराय ने 'हंस' में की तो उन्होंने वही कहा कि आप प्रमाण कीजिए बिना प्रमाण दिए मैं आपके किसी आरोप पर गंभीरता से विचार नहीं करूंगा

2. नवजागरण युग का निबन्ध साहित्यः-

डॉ. रामविलास शर्मा ने निबंध साहित्य का मूल्यांकन इन शब्दों में किया है- ''भारतेन्दु युग का सबसे विकसित साहित्यिक रूप निबंध थे। निबन्ध रचना का यह कौशल उन कलाकारों का अपना था। और पत्रकारिता की भूमि पर वह फला-फूला था। भारतेन्दु युग के लेखक पत्रकार भी थे। और साहित्यकार भी थे। दो-दो चार-चार आने की पत्रिकाएँ निकाल कर वे अपना साहित्य जनता तक पहुँचाते थे और आये दिन की समस्याओं पर पत्रकारों की तरह लेख आदि भी लिखते थे। नये जमाने में पत्रों पर बड़े पूँजीपतियों के नियंत्रण ने पत्रकारों को मशीन का पुर्जा बना दिया है और उनकी साहित्यिक रचना शक्ति को बराबर कुचल डालने की कोशिश की है। इस प्रकार भारतेन्दु जी ने अपनी पत्रिकाओं द्वारा समाज की नवचेतना की अभिव्यक्ति की।''

3. जनवादी विचारधाराः-

भारतेन्दु कालीन कविता की जनवादी विचारधारा का स्वर भारतेन्दु युग की कविता की विषयवस्तु और शैली दोनों में ही समान रूप से मुखरित हुआ है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में भारतेन्दु युग की जनवादी भावना उसके समाज सुधार में निहित है। भारतेन्दु स्वदेशी आंदोलन के अग्रदूत न थे, वे समाज सुधारकों में से भी प्रमुख थे। स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह, विदेश यात्रा आदि के समर्थक थे। इससे भी बढ़कर महत्व की बात यह थी कि भारतीय महाजनों के पुराने पेशे सूदखोरी की उन्होंने कड़ी आलोचना की थी। लिखा था- ''सर्वथा से अच्छे लोग ब्याज खाना और चूड़ी पहनना एक सा समझते हैं पर अब के आतसियों को इसी का अवलम्ब है, न हाथ हिलाना पड़े न पैर, बैठे-बैठे भुगतान कर लिया।''

4. डॉ. रामविलास शर्मा की समीक्षा शैलीः-

रामविलास शर्मा और समीक्षा- शैली की प्रमुख विशेषता है व्यंग्य की मार करना। नगेन्द्र के विचार और अनुभूति नामक पुस्तक पर चुटकी लेते हुए कहते हैं कि नगेन्द्र जी के विचार को उन्हें एक कदम धकेलते हैं। तो उनकी अनुभूति उन्हें चार कदम पीछे घसीट ले जाती है। इस पुस्तक का नाम एक कदम आगे और चार कदम पीछे भी हो सकता है।

शर्मा जी की समीक्षा शैली की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें उदाहरण विद्यमान रहते है। इसमें आलोचना में बल आ जाता है। उन्होंने जब महापंडित राहुल जी की विचारधारा

Received : 11 April, 2018 | Reviewed 22 April, 2018 | Accepted : 05 May, 2018

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaiior), Mahasamund (C.G.)

की आलोचना की थी तो साहित्य में जैसे एक भूचाल आ गया था, किन्तु उन्होंन प्रमाण देकर अपनी बात कही थी, इसलिए आने वाले तूफान से अप्रभावित रहे। स्वयं उनकी आलोचना जब अमृतराय ने 'हंस' में की तो उन्होंने वही कहा कि आप प्रमाण कीजिए बिना प्रमाण दिए मैं आपके किसी आरोप पर गंभीरता से विचार नहीं करूंगा।

डॉ. रामविलास शर्मा साम्राज्यवाद पूँजीवाद आदि के कट्टर शत्रु हैं और जिन रचनाओं में इनकी पंक्तिचित्र भी झलक मिलती हो उनकी आलोचना करते हैं। उनका मत है, ''जो पूँजीवाद पर साम्राज्यवाद की खुशामद करे, उन्हें स्थायी बनाने में मदद करे। प्रगति के मार्ग में काँटे बिछाये, देश का शत्रु है, और 'हिन्दी' का शत्रु है। धर्म और संस्कृति के नाम पर जनता का गला घोंटकर यह पूँजीवाद के दानव को मोटा करना चाहता है। उनसे सभी लेखकों, पाठकों को सावधान रहना चाहिए।'' जहाँ तक डॉ. रामविलास शर्मा का प्रश्न है वे मार्क्सवादी आलोचक होने के कारण साहित्य में सर्वहारा के चित्रण पर बल देते हैं। 'साहित्य संदेश' में प्रकाशित अपने लेख में उन्होंने कहा है कि- ''साहित्य लिखते समय साहित्यकार को यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल सर्वहारा वर्ग की समस्याएँ ही नहीं है'' वर्ग वैषम्य से पीड़ित जनता भी है। क्या प्रगतिशील साहित्य को उनके विषय में नहीं सोचना चाहिए। केवल सर्वहारा वर्ग की बात कहना चाहिए। केवल सर्वहारा वर्ग की बात कहना साहित्य की संकीर्ण परिधि में आबद्ध कर देना है।

5. डॉ. शर्मा के समीक्षा पद्धति संबंधी मत:-

मार्क्सवादी हिन्दी समीक्षकों में डॉ. रमाविलास शर्मा का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। रामविलास शर्मा का समीक्षा कर्म हिन्दी में प्रगतिवादी विचारधारा के एक प्रमुख प्रवक्ता के रूप में आरम्भ होता है। पर क्रमशः उनके लेखन में वाद का आग्रह हल्का होता जाता है, और विवेचन प्रधान। इस आरंभिक रूझान से उनका संस्कार कुछ ऐसा बन गया कि वे किसी लेखक की विचार की जितनी अच्छी व्याख्या कर सकते हैं उनती उनकी रचनात्मकता की नहीं और इसी प्रवृत्ति का एक परिणाम यह हुआ कि ध्वंसात्मक आलोचना उन्हें उतनी ही प्रिय है जितनी अपने मत की स्थापना।

■■

PRINCIPAL
...mchandi College Saraipali
Mahasamund (C.G